sankalp1:arunjaity.qxd 9/26/2010 8:38 PM Page 92

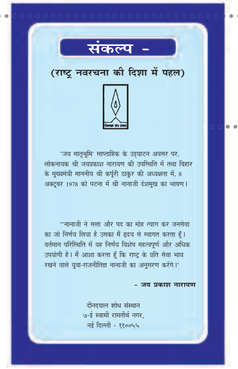
संकल्प –

(राष्ट्र नवरचना की दिशा में पहल)

"जय मातृभूमि मासिक के उद्घाटन अवसर पर, लोकनायक श्री जयप्रकाश नारायण की उपस्थिति में तथा बिहार के मुख्यमंत्री माननीय श्री कर्पूरी ठाकुर की अध्यक्षता में, 8 अक्टूबर 1978 को पटना में श्री नानाजी देशमुख का भाषण।

"नानाजी ने सत्ता और पद का मोह त्याग कर जनसेवा का जो निर्णय लिया है उसका मैं हृदय से स्वागत करता हूँ। वर्तमान परिस्थिति में यह निर्णय विशेष महत्त्वपूर्ण और अधिक उपयोगी है। मैं आशा करता हूँ कि राष्ट्र के प्रति सेवा भाव रखने वाले युवा-राजनीतिज्ञ नानाजी का अनुसरण करेंगे।"

- जय प्रकाश नारायण

लोकायन शोध संस्थान
७-ई स्वामी रामतीर्थ नगर,
नई दिल्ली - ११००५२

'जय मातृभूमि' साप्ताहिक के उद्घाटन अवसर पर, लोकनायक श्री जयप्रकाश नारायण की उपस्थिति में तथा बिहार के मुख्यमंत्री माननीय श्री कर्पूरी ठाकुर की अध्यक्षता में, 8 अक्टूबर 1978 को पटना में श्री नानाजी देशमुख का भाषण।

नए अवतार में नानाजी

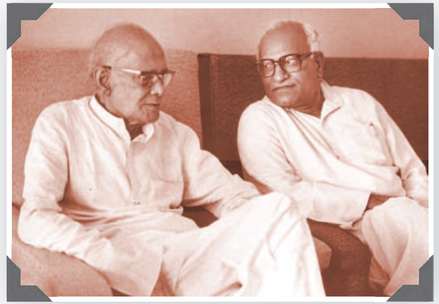

"नानाजी ने सत्ता और पद का मोह त्याग कर जनसेवा का जो निर्णय लिया है उसका मैं हृदय से स्वागत करता हूँ। वर्तमान परिस्थिति में यह निर्णय विशेष महत्त्वपूर्ण और अधिक उपयोगी है। मैं आशा करता हूँ कि राष्ट्र के प्रति सेवा भाव रखने वाले युवा-राजनीतिज्ञ नानाजी का अनुसरण करेंगे।"

- जय प्रकाश नारायण

कुछ लोगों को यह विश्वास नहीं हो पा रहा है कि अपने जीवन का लम्बा भाग राजनीति में खपा देने एवं राजनीति में आगे बढ़ जाने के पश्चात् क्या कोई राजनीतिज्ञ सचमुच रचनात्मक कार्य में लगने का विचार कर सकता है? ऐसे विचार को सच्चे हृदय से क्रियान्वित कर सकता है?

संकल्प –

(राष्ट्र नवरचना की दिशा में पहल)

20 अप्रैल 1978 को मैंने राजधानी के पत्रकार बंधुओं के समक्ष अपने मन का यह भाव प्रकट किया था कि युवा-पीढ़ी की कार्य-शक्ति को रचनात्मक दिशाओं में प्रवाहित करने के लिए कुछ वरिष्ठ एवं प्रभावशाली नेताओं को राजसत्ता से अलग होकर रचनात्मक कार्य का प्रत्यक्ष उदाहरण प्रस्तुत करना चाहिए। उसी समय मैंने अपना यह व्यक्तिगत संकल्प भी घोषित किया था कि एक साधारण कार्यकर्ता के नाते मैं अपनी शेष आयु को युवा-पीढ़ी के साथ सहयोग करते हुए देश की सामाजिक-आर्थिक पुनर्रचना की दृष्टि से कुछ रचनात्मक प्रयोगों में व्यतीत करना चाहूँगा।

मेरे लिए यह बहुत संतोष और उत्साह की बात है कि मेरी इस विनम्र घोषणा की ओर सम्पूर्ण देश का ध्यान आकर्षित हुआ। देशभर के समाचारपत्रों, युवा संगठनों, राजनीतिक तथा बुद्धिजीवी क्षेत्रों में उस पर प्रतिक्रिया और चर्चा हुई। इस राष्ट्रीय बहस का मैं स्वागत करता हूँ क्योंकि यह मेरे लिए बहुत ही उद्बोधक एवं प्रेरक सिद्ध हुई है। इस बहस का गंभीर अध्ययन करने पर मैं इस निष्कर्ष पर पहुँचा हूँ कि मेरे मूल विचार का स्वागत करते हुए भी कुछ लोगों को यह विश्वास नहीं हो पा रहा है कि अपने जीवन का लम्बा भाग राजनीति में खपा देने एवं राजनीति में आगे बढ़ जाने के पश्चात् क्या कोई राजनीतिज्ञ सचमुच रचनात्मक कार्य में लगने का विचार कर सकता है? ऐसे विचार को सच्चे हृदय से क्रियान्वित कर सकता है? कुछ लोगों को यह शंका हुई कि कहीं इस कथन के पीछे कोई राजनीतिक चाल तो नहीं है। कुछ बंधुओं ने इसे सत्तारूढ़ दल की आंतरिक स्पर्धा राजनीति से जोड़कर कुछ नेताओं को सत्ता से हटाने की सुनियोजित व्यूहरचना ही मान लिया। मैं इन शंकालु बंधुओं को इसके लिए कतई दोषी नहीं ठहराता। उनके मन की ये शंकाएं भारत की राजनीतिक कार्यप्रणाली, उस कार्यप्रणाली में से निकले नेतृत्व और उपजी राजनीतिक संस्कृति के प्रति जनमानस में व्याप्त गहरी अनास्था का ही परिचायक है। इस अनास्था को उत्पन्न करने के लिए समाज नहीं, राजनीतिक नेतृत्व स्वयं दोषी है।

तर्क नहीं कृति चाहिए

मैं समझता हूँ कि इन शंकाओं का निवारण केवल शाब्दिक तर्कवाद द्वारा संभव नहीं है। इसके लिए कथनी-करनी में विद्यमान अंतर को दूर करना होगा। मैं अन्य राजनीतिक कार्यकर्ताओं की ओर से कुछ कह सकने की स्थिति में नहीं हूँ। किन्तु अपनी ओर से देशवासियों को यह बताना आवश्यक समझता हूँ कि मेरे संकल्प को कार्यरूप में परिणत करने का समय आ पहुँचा है। 11 अक्तूबर, 1978 को मेरी आयु के 62 वर्ष पूरे हो रहे हैं। गत वर्ष आयु के 61 वर्ष पूरे होने पर मैंने अपने मन ही मन यह संकल्प किया था। तभी से मैं अपने मन, मस्तिष्क को इस दिशा में तैयार करने एवं अपने वर्तमान राजनीतिक दायित्वों से धीरे-धीरे मुक्त होने की दिशा में आगे बढ़ता रहा हूँ। अब मैं यह सार्वजनिक घोषणा करने की स्थिति में हूँ कि 11 अक्तूबर से मैं सत्ता और दलगत राजनीति से अलग होकर अपने समय को पहले से प्रारंभ हुए एवं आवश्यकतानुसार नवीन रचनात्मक कार्यों में लगा सकूँगा।

गत अप्रैल मास में मेरे मनोभाव की सार्वजनिक अभिव्यक्ति को लेकर जो राष्ट्रीय बहस छिड़ी थी, उसके